श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - १०

मार्च २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जैसे जैसे इन्द्रियाँ बढती जाती है, वैसे वैसे..... भी बढती जाती हैं ।
२. शांति स्तव पूर्वसूरिओ ने गुरु आम्नाय पूर्वक प्रकट किये..... से गुंथा गया है ।
३. सच्चा रुप देह में नहीं..... के स्वरुप में है ।
४. ..... के भव्य जिनालय के निर्माण के लिये साठ कुशल कारीगरों ने आठ वर्ष काम किया ।
५. आहार के अजीर्ण से ..... का अजीर्ण ज्यादा खतरनाक है ।
६. कर्म का संग छूट जाय तो आत्मा की ..... से उर्ध्वगति होती है ।
७. अल्पबहुत्व का सूक्ष्मता से गहराइ से विचार करें तो ख्याल आता है कि इस विश्व मे रहे हुये सभी प्रकार के जीवो में सबसे अल्प संख्या में ..... हैं ।
८. ..... के श्रुतमद के परिणाम स्वरुप इस भरत क्षेत्र के १४ पूर्व के रहस्य का एवं परंपरा से १४ पूर्व का लोप हुआ ।
९. गति सहायक..... अलोक में न होने से अलोक में सिद्ध के जीव नहीं जा सकते ।
१०. श्री जिनेश्वर देव का पूजन करते समस्त प्रकार के ..... नाश पाते है ।
११. सिद्ध परमात्मा को वेदनीय कर्म के संपूर्ण क्षय से ..... होता है ।
१२. माता नामिलदेवी ने गर्भाधान के समय..... को निरखा था ।
१३. किन जीवों की संख्या कम - किन जीवों की उनसे कितनी अधिक इसकी जानकारी जीवों का ..... कहलाती है ।
१४. ..... यह सुख का नहीं दुःख का मार्ग है ।
१५. अग्नि की ज्वाला का स्वभाव उपर जाने का है उसी तरह..... का स्वभाव उपर जाने का है ।
१६. ..... भी मनुष्य से असंख्यात गुण अधिक है ।
१७. सिद्ध परमात्मा जब देह का त्याग करते हैं तब जिस संस्थान में होते हैं, वही संस्थान मुक्ति में सिद्ध जीवों के .....का होता है ।
१८. जहाँगीर द्वारा प्रतिमा को वन्दन करने पर पाषाण प्रतिमा ने एक हाथ उपर करके सम्राट को उच्च स्वर में ..... दिया ।
१९. यदि इन तीन योगों को विराम मिलता है तभी मुझे..... स्वरुप मोक्षपद की प्राप्ति होगी ।
२०. जिनके नाम मंत्र और अक्षर मंत्रो की .....पूर्वक स्तवीत जया देवी नमन करने वालों को शांति प्रदान करती है । १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. किसके बीज समान बंध छेद से सिद्ध परमात्मा की उर्ध्वगति होती है ?
२. उदयपुर के संघ ने पू. कल्याण सागर सूरि को किस पद से विभुषित किया ?
३. सिद्ध भगवंतो को किसका सुख है ?
४. दंडक की रचना के समय किसका पुण्यवंत साम्राज्य प्रवर्तमान था ?
५. सनत् चक्रवर्ती को छः खंड के वैभव से ज्यादा सुंदर क्या भासित होने लगा ?
६. नारकों से असंख्यात गुना अधिक कौन से जीव है ?
७. सिद्धशीला कैसे आकार की है ?
८. सच्चा सुख क्या बनने में हैं ?
९. जयशेखर सूरि कृत कल्पसूत्र सुखावबोध की प्रत सुवर्ण अक्षरों से किसने लिखवाई ?
१०. विघ्नरुपी बेले किससे छेदी जाती है ?
११. चक्रवर्तीपद एवं इन्द्रपद को भोगने से जो सुख प्राप्त होता है उसे कैसा सुख कहते है ?
१२. नेपाल देश में श्री भद्रबाहु स्वामी किसकी साधना कर रहे थे ?
१३. संस्कृत में भोज व्याकरण किसने रचा ?
१४. दुःख टालना हो सुख पाना हो तो क्या बनने का पुरुषार्थ करना चाहिये ?
१५. सोने का गलाने का पात्र उसे क्या कहते हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) कुलाल २) अप्पहिया ३) व्योम ४) मुक्खपयं ५) संस्तुता ६) अेति ७) मनोज्ञ ८) शक्र ९) श्रुतार्णवात १०) अेवं ११) भेया १२) विरय १३) तिर्यक १४) निउण १५) हि १६) अहिया १७) सीसेण १८) भवण १९) यायात २०) सुलह

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) आगरा	१) महा तपस्वी साथी मुनिओ	६) तप मद	६) चिदानंद मय
२) गुलेल पत्थर	२) अनीः पातनी	७) उल्कापात	७) पतंगिया
३) चक्षुरिन्द्रिय गुलामी	३) अरुपी	८) श्री शांति स्तव	८) मांढा जिनालय
४) मुक्ति	४) तेउकाय	९) सिद्ध भगवंत	९) पूर्व प्रयोग
५) रायसी शाह	५) श्री मानदेव सूरि	१०) नामकर्म क्षय	१०) महावीर स्वामी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. वि.स. १६७५ वैशाख सुद ८ को पू. कल्याणसागर सूरि के उपदेश से कितने जिनबिंम्बो की प्रतिष्ठा हुई ?
२. प्रभु की वैराग्यमय देशना सुनकर भरत महाराजा के कितने भाईयों ने दीक्षा ली ?
३. मुक्तात्मा की उर्ध्वगति के हेतु कितने हैं ?
४. खंभात के पद्मसिंह शाह ने पार्श्वनाथ के कितने स्फटिक बिंब प्रतिष्ठित किये ?
५. स्थूलीभद्रजी की कितनी बहनों ने दीक्षा ली थी ?
६. अनादि काल से जीव कितने दंडक में परिभ्रमण कर रहा है ?
७. सिद्धशीला सर्वार्थ सिद्ध विमान से कितने योजन उपर है ?
८. दंड कितने है ?
९. शांतिस्तव में कुल कितनी गाथा हैं ?
१०. सनत् कुमार चक्रवर्ती के शरीर में अचानक कितने रोग उत्पन्न हुये ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सनकुमार चक्रवर्ती को वैद्य या हकीम की शरण के बदले अरिहंत की शरण सच्ची लगने लगी ।
२. सिद्ध भगवंतो का सुख क्लेश से रहित अव्यय है ।
३. धवलचंद्र के शिष्य जिनहंस मुनि थे ।
४. श्राविका हीरबाई ने संघ सहित शत्रुंजय की निन्यनवे बार यात्रा कराई थी ।
५. काम साधन को भी शस्त्र बना देने की ताकात रखता है ।
६. देवगिरी निवासी श्रेष्ठी तुकजी के पुत्र हासुजी ने अद्बुदजी मंदिर का कोट सहित जीर्णोद्धार किया ।
७. गजसार मुनि ने खुदके आत्महित और आत्मकल्याणार्थे दंडक की रचना की है ।
८. घनोदधि अपकाय का ही अेक प्रकार है ।
९. सर्व मंगलो में मंगलरुप नवकारमय जिनशासन सदा जय पाये ।
१०. अनादि काल से कई इन्द्रियो के सुख भोगकर अब जीव तृप्त हुआ है .

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. मद कहीं तेरे साधना जीवन को सिद्धी के शिखर पर पहुँचने से पहले ही लुढका न दे ।
२. संख्या में गिनती शक्य हो वहाँ तक संख्यात शब्द वापरते हैं ।
३. कई आचार्य आकाश के जैसी सर्वव्यापी मुक्ति है ऐसा कहते हैं ।
४. जो जीतेन्द्रिय बने हैं, उन्होनें ही सुख को पाया है सुखी बने है ।
५. मुक्ति प्राप्त करने योग्य सामग्री का जिन्हें अभाव है, ऐसे भव्य जीवों को भी सदा दुर्लभ है ।
६. जैसे जैसे पराजय होती गई भरत ज्यादा परेशान होने लगे ।
७. ऐसे दुर्लभ मानव भव की प्राप्ति महान पुण्य के योग से हुई है ।
८. सूरि के उपदेश से महाराव ने जैनधर्म के उदात्त आदर्शो को अपनाया उसी तरह पर्व के दिनों में अमारि पडह की उद्घोषणायें भी करायी ।
९. संसार की बजाय संयम प्यारा लगा, भोग की बजाय त्याग से प्रीत बंधी ।
१०. विधिपूर्वक अनुष्ठान करनेवालों को जल वगैरह के भय से मुक्त करने वाला तथा उपद्रवों की शांति करने पूर्वक तुष्टि और पुष्टि करने वाला है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मानवभव की दुर्लभता २) सिद्धशीला ३) वर्धमान-पद्मसिंह के सुकृत्य ४) इन्द्रियों की गुलामी का करुण अंजाम
५. रुप मद

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com